वार्षिक पत्रिका

2019 - 20

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित
श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या महाविद्यालय, कचहरी चौक,
रायपुर(छ.ग.)

आरोहण

2019-20

प्राचार्य

डॉ. संगीता घई

सम्पादक मण्डल

डॉ. स्मृति अग्रवाल

डॉ. पद्मा शर्मा

डॉ. गायत्री शर्मा

डॉ. जॉली पॉल

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित
श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या
महाविद्यालय, कचहरी चौक,.
रायपुर(छ.ग.)

सम्पादकीय

आज इस कॉलम के माध्यम से मैं हमारे महाविद्यालय के "32" वर्ष पूर्ण होने की दशा में निकलने वाली पत्रिका 'आरोहण' का यह अंक लेकर आयी हुँ जिसमें मेधावी छात्राओं की काव्य–प्रतिभा एवं लेखन शैली को उभार कर उनकी प्रतिभाओं को दिखाने का प्रयास किया गया है।

रचनात्मक कौशल एक ऐसा कौशल है, जिसे यदि मंच दे दिया जाए तो पूरी उर्जा और उत्साह के साथ अपनी सृजनात्मकता का भरपूर प्रदर्शन छात्राओं द्वारा किया जाता है। छात्र समुदाय और प्राध्यापक इस पत्रिका के माध्यम से विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन कराती दिखाई देती है। और इसके साथ ही भावात्मक आन्तरिक अभिव्यक्ति कवि हृदय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति बनकर प्रस्फुटित होती है।

मुझे आशा है आने वाले समय में भी हम सब इसी तरह मिलकर पत्रिका के द्वारा एक उत्कृष्ट साहित्यिक मंच छात्राओं और प्राध्यापकों को उपलब्ध कराते रहेंगें।

पत्रिका परिवार समस्त पथप्रदर्शकों का आभारी है और जिन्होंने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका प्रकाशन में अपना सहयोग दिया जो कि प्रशंसनीय है।

डॉ. स्मृति अग्रवाल
(अंग्रेजी विभाग)

प्राचार्य की कलम से

महाविद्यालय के "32" वर्ष पूर्ण हो चूके यह अत्यंत गौरव का विषय है। पत्रिका "आरोहण" के प्रकाशन से मैं हर्षित हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के इस प्रकाशन से महाविद्यालयीन विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का उपयुक्त अवसर मिलेगा।

महाविद्यलय केवल ज्ञानार्जन का केन्द्र ही नहीं बल्कि छात्राओं के सर्वांगीण विकास का मंच हैं। मात्र पीन छात्राओं से प्रारंभ हुआ यह महाविद्यालय आज प्रदेश के महाविद्यालयों में प्रमुख सीान पर है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. संगीता घई,
प्र. प्राचार्य,
श्रीमती पी. जी. डागा
कन्या महाविद्यालय ,
रायपुर(छ.ग.)

सुविचार

*****

1. असफलता का समय सफलता के बीज बोने का सर्वश्रेष्ठ समय है।
2. ईश्वर का दिया कभी अल्प नहीं होता जो दूर जाये संकल्प नहीं होता, हार लक्ष्य से दूर रहना, क्योंकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता।
3. कुदरत का नियम चमकता नहीं है जो सहन करने की क्षमता रखता है।
4. कोइ कुद भी बोले अपने आप को शांत रखों, क्योंकि धूप कितनी भी तेज हो, समुंदर को सुखा नहीं सकती।
5. तकदीर बदल जाती है जब इरादे मजबूत हो, वरना जिंदगी निकल जाती है किस्मत संवारने में।
6. खुशियों का कोई रास्ता नहीं होता खुश रहना ही रास्ता है।

अस्मिता शुक्ला
बी.कॉम. प्रथम
वर्ष

कविता

" हिन्दी भाषा "

*****

सरिता में जैसे गंगा
ज्यो नभ में सूरज चंदा
किसी सुहागिन के माथे पर
सजती है जैसे–बिन्दी
विश्व पटल पर शोभित ऐसी
सुगठित समृद्ध से हिन्दी।।
झांके जरा हिन्दी दिवस पर
आइये इसके वामावरण में
संरचना विलक्षण साहित्य की निहित इसके कण–कणमें
हिन्दुस्तान की शान है
इसकी अनुपम से बुलंदी
विश्व पटल पर शोभित ऐसी
सुगठित समृद्ध से हिन्दी।।
हो वर्चस्व अखिल विश्व में
ऐसी विश्वास और आशा है
है भाषा अनेकों वसुधा में
पर हिन्दी दुर्लभ भाषा है
नीर भी बहे हिन्दी पवन भी चले हिन्दी
धड़कन भी धड़के हिन्दी
ऐसी भाषा है हिन्दी
विश्व पटल पर शोभित ऐसी
सुगठित समृद्ध से हिन्दी।।

शोभना देवी सेन
सहा. प्राध्यापक(इतिहास)

ऐसी वाणी बोलिये

एक राज कुमार था। वह बहुत ही घमंडी और उदंड था लोग उसके दूर व्यवहार से बहुत परेशान थे राजा उसे बहुत ही समझाता लेकिन उसपर कुछ असर नहीं होता था। राजा एक दिन उसे एक संत के पास ले गए और उसके चरणों में प्रणाम कर अपनी परेशानी बताई संत श्री ने कहा घबराओं नही सब ठीक हो जाएगा।

संत श्री ने कहा राज कुमार सामने जो पौधा है उसकी कुछ पत्तियां तोड़ के लाओ राजकुमार पत्तिया तोड़ के लाया संत बोले इसे खालों राज कुमार ने जैसे ही पत्तियां मुह में डाली वैसे ही कड़वाहट के कारण तुरंत थुक दिया और आवेश में आकर दस पौधे को उखाड़ कर फेंक दिया, संत ने पूछा क्यों क्या हुआ, रात कुमार ने कहा दुसरों को कड़वाहट देने वाले का यही हाल होना चाहिए। संत बोले, रात कुमार तुम भी लोगों को कड़वे वचन बोलते हो अगर वे भी तुम्हारे दूरव्यवहार से दुखी होकर वही करे जो तुमने इस पौधे के साथ किया तो क्या परिणाम होगा? देखो बेटा मीठी ओर हितभरी वाणी दुसरों को आनन्द शांति और प्रेम प्रदान करती है मुख से इस शब्द कभी मत निकालो जो किसी का दिल दुखाए राज कुमार को अपनी भूल का एहसास हुआ। संत की शिख मान कर उस दिन से उसने अपना व्यवहार बदल दिया।

सीख :– ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोए औरन को शीतल करे आपहु शीतल होए।

संदेश

जिसमें कोई भूल नहीं, भगवान उसी को कहते है।
भूल मिटाना जो चाहे, इंसान उसी को कहते है।
भूल करे पर माने नहीं, शैतान उसी को कहते है।
भूल का जिसको ज्ञान नही, हैवान उसी को कहते है।
भूले हुए को पथ दिखाए, गुरू का ज्ञान उसी को कहते है।
भूल मिटाना जो चाहे, इंसान उसी को कहते है,
जिसमें कोई भूल नोहो, भगवान उसी को कहते है।

टीचर

मॉ जैसी होती है टीचर, कभी लाड़ कभी प्यार तो,
कभी कभी डॉटती है टीचर। अगर समझ ना आए तो,
बार बार समझातीं है टीचर, रोते को हसाती है टीचर,
नेक इंसान बनाती है टीचर। इसलिए टीचर होती बहुत जरूरी
जिससे होती हमारी हर जरूरत पूरी टीचर से ही जीवन सारा
जिससे बनता संसार हमारा इस लिए

I Love My Teacher.

पुस्तक

पुस्तक सबकि मित्र महान करती सबका काम आसान
पुस्तक में ही अवतरित वेद बाइबिल और कुरान
नेक बनो तुम कहती पुस्तक धरि अलमारी में जाती
वह बस्ते की शान बढ़ाती पर पन्नों के खुलते ही यह
लेखक से यह बात करती मुझे पढ़ो तुम कहती पुस्तक
दुनिया भर की सैर कराती ज्ञान और तकनिकी सिखाती
अंधकार से उज्जवल पथ की पाठक को है राह दिखाती
समझ चलो तुम कहती पुस्तक संस्कृतियों का दर्पण पुस्तक
इतिहासों का घर्षण पुस्तक भूत भविष्य वर्तमान बताती
प्रेम कहानी सुनाकर खुश करती लाल सृजन का अर्पण पुस्तक
ख्याल करो तुम कहती पुस्तक नेक बनो तुम कहती पुस्तक

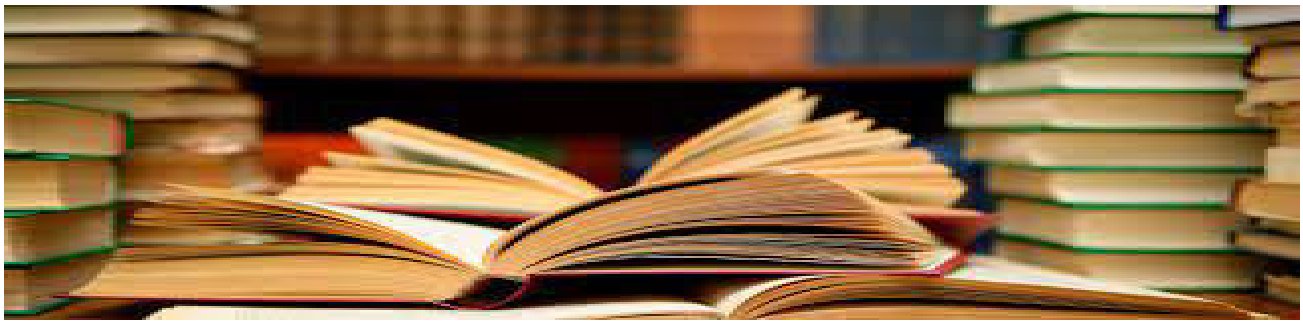

खिलाड़ी छात्राओं को पुरूस्कार वितरण

महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण

सांस्कृतिक कार्यक्रम की रंगारंग प्रस्तुती

प्रथम पंक्ति के केन्द्र में प्राचार्य श्रीमती डॉ संगीता घई
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से दाएं में डॉ पदमा शर्मा, श्रीमती प्रिया चन्द्राकर एवं डॉ, मेघा ठाकुर
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से बाएं में डॉ गायत्री शर्मा, डॉ. स्म ृति अग्रवाल एवं डॉ रेणुका बक्षी
द्वितीय पंक्ति में सहायक प्राध्यापिकाऐं

वार्षिक पत्रिका

2018-19

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित
श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या
महाविद्यालय, कचहरी चौक,
रायपुर(छ.ग.)

2018-19

****

प्राचार्य
डॉ. संगीता घई
सम्पादक मण्डल

*** *** ***

डॉ. गायत्री शर्मा
डॉ. स्मृति अग्रवाल

*** *** ***

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित
श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या
महाविद्यालय, कचहरी चौक, रायपुर(छ.ग.)

ललित तिवारी,
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय विद्यालय समिति,

अध्यक्ष की कलम से

सेवा में,

प्रमुख,
श्रीमती पी.जी. डागा कन्या
महाविद्यालय रायपुर(छ.ग.)

1987 से सफलतापूर्वक "31" साल पूरे करने पर महाविद्यालय के पूरे परिवार को बधाई। मुझे यह तानकर बहुत खुशी हुई कि "आरोहण" लंबे समय से प्रकाशित हो रहा है। मेरा मानना है कि किसी प्रतिष्ठित संस्थान की कोई भी पत्रिका उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों का आईना होती है।

मेरी जानकारी के अनुसार यह रायपुर शहर के सबसे बड़े निजी कन्या महाविद्यालयों में से एक है, जहां गरीब मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़कियां समग्र वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं।

उपरोक्त सभी के लिए अकादमिक टीम को होर्दिक बधाई। मुझे पूरी उम्मीद है कि टीम अपनी स्वयं की संदर्भित शोध पत्रिका प्रकाशित करने की दिशा में पटल करेंगी।

अध्यक्ष
शासीनिकाय
श्रीमती पी.जी. डागा
कन्या
महाविद्यालय, रायपुर

सम्पादकीय

हमारे महाविद्यालय के "31" वर्ष पूर्ण होने की दशा में यह से निकलने वाली वार्षिक पत्रिका 'आरोहण' में महाविद्यालय प्राध्यापकों व छात्राओं की सुजनशीलता और प्रतिभा को उकेरा ही नहीं गया है अपितु इसके माध्यम से जीवन के हर पक्ष को दिखाने का प्रयास किया गया है।

पत्रिका का यह अंक पुर्णतः साहित्यिक विविधता लिए हुए है। छात्राओं ने अपनी प्रतिभा का परिचय हर तरह से दिखाया है। अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। क्रीड़ा के क्षेत्र में महाविद्यालय ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है।

महाविद्यालय की छात्राओं ने जीवन के प्रत्येक पहलू का वर्णन करने का प्रयास किया है, चाहे नारी जीवन हो, माँ हो, गुरू की महिमा, समय का महत्व, ममता, बिटिया, आदि विषयों के माध्यम से अपने समय के अनुसार कविता लेख आदि को प्रस्तुत किया है।

पत्रिका परिवार सदैव से अपने समस्त पथप्रदर्शकों का आभारी रहा है और रहेगा जिन्होंने पत्रिका प्रकाशन मं अपना सहयोग दिया है जो प्रशंसनीय है।

डॉ. गायत्री शर्मा
दर्शनशास्त्र(विभाग)

डॉ. संगीता घई, प्र. प्राचार्य,
श्रीमती पी. जी. डागा कन्या
महाविद्यालय, रायपुर(छ.ग.)

प्राचार्य की कलम से

*** *** ***

छत्तीसगढ़ प्रदेश में सन् 1987 से शिक्षण संस्थान में विभिन्न संकायों के अंतर्गत समय की मॉग के अनुरूप रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों के साथ अन्य विषय कला, वाणिज्य, विज्ञान स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन की व्यवस्था है। इस महाविद्यालय में दूर दराज अंचल से अध्यापन के लिए छात्राएं आती है।

महाविद्यलय केवल ज्ञानार्जन का केन्द्र ही नहीं बल्कि छात्राओं के सर्वांगीण विकास का मंच हैं आरोहण पत्रिका के माध्यम से छात्राओं को नई दिशा होने का सशक्त माध्यम है। आरोहण का यह अंक विविधता समेटे हुए है। छात्राओं ने सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

छात्राओं के सर्वांगीण विकास व उत्थान के लिये समुचित मार्गदर्शन, प्रेरणा व सतत् सहयोग अपेक्षित रहता है और यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि महाविद्यालय के प्राध्यापकगण ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया। छत्तीसगढ़ में शिक्षा के क्षेत्र में एक स्तम्भ निरूपित किया गया है।

वर्तमान अध्यक्ष अजय तिवारी जी ने महाविद्यालय की गौरवशाली सतत् यात्रापथ पर अग्रसित रहकर आग्र बढाया। शिक्षा का यह पौधा रोपते समय यह कल्पना अवश्य की होगी कि एक दिन यह पौधा वटवृक्ष का रूप ले लेगा।

यह पत्रिका एक दर्पण है जिसमें महाविद्यालय की सम्पूर्ण छविपरिलक्षित हो रही है मैं प्राध्यापकों, कर्मचारियों, छात्राओं को तथा जिन्होंने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका के प्रकाशन में योगदान दिया है। पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक बधार्द देती हूॅ एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूॅ। मैं समिति के सदस्यों की आभारी हूॅ कि उन्होंने समय–समय पर पूर्ण सहयोग देकर इस संस्था को ऊॅचाई पर पहुॅचाया, आगे भी यही कामना तथा विश्वास के साथ सतत् सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

खेलों का महत्व

****

खेलों का हमारे जीवन में बड़ा ही महत्व होता है। खेल के द्वारा ही मानव स्वस्थ रह सकता है। उसके शारीरिक और मानसिक विकास में खेल का महत्वपूर्ण योगदान है। जिस प्रकार शिक्षा का अर्थ अध्ययन अध्यापन ही नहीं अपितु व्यक्ति के पूर्ण चरित्र और व्यक्तितव का निर्माण होता। ठीक उसी तरह खेलों को शिक्षा के अंतर्गत रखा गया है। खेलों के द्वारा छात्राओं की बौद्धिक और शारीरिक विकास के लिए इसी प्रकार के सर्वांगीण शिक्षा की आवश्यकता है।

मैं एक खेल प्रशिक्षक होने के नाते यह चाहता हूँ कि हमारी महाविद्यालय की छात्राऐं हमारे राज्य में ही नहीं अपितु पूरे देश में खेलकर एक नया कीर्तिमान स्थापित करें।

इसके लिए मि अपने महाविद्याालयों में जहां शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष जोर देते हैं। वहीं छात्राओं को खेलकुद की गतिविधियों के लिए भी प्रोत्साहित करतें।

डॉ. प्रेमशंकर
किड़ा अधिकारी
बी.ए., बी.पी.एड., एम. पी.एड.

कुश्ती प्रतियोगिता बालिका वर्ग

तैराकी प्रतियोगिता बालिका वर्ग

समय का सदुपयोग

*****

मनुष्य जीवन एवं रूपयों पैसों भी अधिक महत्व समय का है। धन का अपव्यय निर्धन बनाता है किंतु जिन्होंने समय का सदुपयोग करना नहीं सीखा और उसे आलस्य में गंवाते रहते है, उनके सामने आर्थीक विषमता के अतिरिक्त नैतिक तथा सामाजिक बुराईयां और कठिनाईयां उत्पन्न हो जाती है। समय का सदुपयोग धन के उपयोग से अधिक विचारणीय है।

समय के अपव्यय से मनुष्य की शक्ति औश्र सामर्थ्य ही धरती है। कहने का तात्पर्य ये है कि नष्ट किया गया वक्त मनुष्य को भी नष्ट कर डालता है।

वक्त की अनियमितता होने, समय का अनुशासन न रखने पर रेल, डाक, कल–करखानों, कृषि आदि कार्य ठपप पड़ जाए। अतः हमें अपनी दिनचर्या को, तथा अपने कार्यों का विभाजन आवश्यकतानुसार करना चाहिए।

सरांश यह है कि वक्त का विभाजन करते समय स्वास्थ्य की बात को भी ध्यान रखा जाए तो स्वस्थ्य बने रह सकते हैं।

वक्त का अभाव किसी के पास नहीं किंतु उसे बेकार के कार्यों में व्यतीत नहीं करना चाहिए। ताश, शंतरंज, मटरगस्ती आदि में समय बरबाद करने से मन और शरीर का पतन होता हैं। समय का महत्व अमूल्य है। हमारी जीवन व्यवस्था के लिए समय सूचि का बहूमुल्य उपहार परमात्मा ने हमें दिया है। इसलिए हमें चाहिए कि समय का उपयोग सदैव सुंदर कार्यों मे करना चाहिए। ताकि इस संसार में सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जिया जा सकें।

डॉ. पद्मा शर्मा
समाज शास्त्र
विभाग

कविता

*****

उन वीरों की कुर्बानी को
आओ याद करे उस अमर कहानी को
करें श्रद्धांजलि अर्पित उन शहीदों को।
चाहे मातृभूमि की रक्षा में
प्राण ही चले जाए
मन में यह शपथ ग्रहण करें
मातृभूमि पर दूश्मन न आने पाए।।
करगिल के अमर शहीदों
देश का हर बच्चा करता तुम्हें सलाम
दे कर अपने प्राणों का बलिदान
दुश्मन का कर दिया किस्सा तमाम।।
धन्य हो तुम भारत के वारों
यशगाान तुम्हारा हम करते हैं
युग–युग तुम्हारा रहेगा श्रृणी
सत्–सत् नमन तुम्हें करते है।।

आकृति
माणिकपुरी
बी.ए. प्रथम वर्ष

चाहत

उड़ना है उन्मुक्त गगन में।
एक खुला आकाश चाहिए।
शिक्षा का हथियारा साथ में,
त्यार – भरा अहसास चाहिए।

नर – नारी रथ के दो पहिए,
कदम मिलाने साथ चाहिए।
दुनिया से अपराध मिटा दे,
ऐसे मजबूत हाथ चाहिए।

अबला नही कुछ जग में,
पिजरबछद मत करना मुझको।
आजादी का आभास चाहिए,
जीवन हू, जिंदा रहने दो,
मत मारो मुझे कोख मे।

धरती बन कर पोषण कर सकती,
ऐसा ही वी विश्वास चाहिए।
दया नही आरक्षण नही,
कृपा नही संरक्षण नही।

बस अपने वजूद का सम्मान चाहिए,
उड़ना है उन्मुक्त गगन में।
एक खुला आकाश चाहिए।

तेज कुमारी साहू
बी. एस सी. द्वितीय वर्ष

हमारा छत्तीसगढ़

****

प्रकृति की गोद में बसी,
इस मिट्टी की सौंधी गंध है।
ऊँची – ऊँची पहाड़ियों से,
बहती नदियों की धार है।
ददरिया, भरथरी, लोरिक चंदा,
पंडवानी जैसे सुंदर गान है।
साहित्यकारों की उर्वरा भूमि यहीं,
दानलीला साहित्य रमायण समान है।
धान का कटोरा यहीं है,
पग – पग पर मिलाते बोरो के गान है।
राजिम, सिरपुर, शिवरीनारायण,
जैसे पवित्र, धाम है।
सभी राज्यों में हमारा छत्तीसगढ़ महाान है।

अभिलाषा कुमार
बीए तृतीय वर्ष

गुरू की महिमा अपार

गुरू के वचन मंत्र समान
गुरू ही मार्गदर्शक हमारे
गुरू ही कराते आत्ममंथन
गुरू ज्ञान का आलोक जगा
जीवन अमृत रस भरते।

अंजु साहु
बीए द्वितीय वर्ष

नारी जीवन में क्या

नारी होती सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा सी,
नारी यौवन काल में गृह देवी
नारी मध्यकाल में सच्ची साथी सी
नारी व ृद्धाकाल में बनती परिचारिका
नारी जीवन दीपक सदृश्य
कर देती मनुष्य का जीवन प्रकाशमय

सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलकियां

रामलीला प्रस्तुती

=

कार्यक्रम में उत्साही छात्राऐं

प्रथम पंक्ति के केन्द्र में प्राचार्य श्रीमती डॉ संगीता घई
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से दाएं में डॉ रेणुका बक्षी, श्रीमती वर्षा सिंह राजपुत
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से बाएं में डॉ. स्म ृति अग्रवाल, डॉ गायत्री शर्मा एवं डॉ. पद्मा शर्मा
द्वितीय पंक्ति में सहायक प्राध्यापिकाऐं

वार्षिक पत्रिका

2017-18

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित
श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या
महाविद्यालय, कचहरी चौक,
रायपुर(छ.ग.)

आरोहण

2017-18

प्राचार्य

डॉ. संगीता घई

सम्पादक मण्डल

डॉ. पद्‌मा शर्मा

डॉ. रेणुका प्रसांत बक्षी

डॉ. जॉली पॉल

डॉ. स्मृति अग्रवाल

राष्ट्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित

श्रीमती प्रमिला गोकुलदास डागा कन्या

महाविद्यालय, कचहरी चौक,

रायपुर(छ.ग.)

सम्पादकीय

सृजनशीलता एक ऐसी घटना है जिसमें सदैव कुछ नया मुल्यवान साहित्य ही समाज को मिलता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। आज इसी कड़ी में हमारे महाविद्यालय के "30" वर्ष पूरे होने के अवसर पर महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका "आरोहण" का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके द्वारा महाविद्यालयीन प्राध्यापकों एवं छात्राओं की साहित्यिक प्रतिभा को उकेरा गया है।

पत्रिका का यह अंक पूर्णता विविधता लिए हेए है। साहित्य सेवियों की उत्साहवर्धक सहभागिता इसमें आपको देखने मिलेगी। पत्रिका चाहे कोई भी हो वह विद्यार्थियों, मनुष्यों की रचनात्मक प्रतिभा को साकार रूप देने का एक सशक्त माध्यम है।

"आरोहण" में छात्राओं ने जीवन के प्रत्येक पक्ष चाहे प्रक ृति हो, गुरू हो, नारी हो या फिर हमारे राज्य की संस्कृति सभी का सुंदर चित्रण कविताओं के माध्यम से किया है।

पत्रिका "आरोहण" के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार सदैव से सभी आभारी रहा है। जिन्होंने पत्रिका में अपना सहयोग दिया है जो कि प्रशंसनीय है।

डॉ. पद्मा शर्मा
(समाजशास्त्र
विभाग)

अजय तिवारी, अध्यक्ष,
राष्ट्रीय विद्यालय समिति,
रायपुर

अध्यक्ष की कलम से

*** *** ***

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्रीमती पी.जी. डागा कन्या महाविद्यालय, रायपुर द्वारा इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका "आरोहण" का प्रकाशन किया जा रहा है। महाविद्यालय के "30" वर्ष पूर्ण होने पर मैं महाविद्यालयीन परिवार को बधाई देता हूँ। पत्र–पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की रचनात्मक, कलात्मक? सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ाने में सहायक होती है।

मुझे विश्वास है महाविद्यालय के छात्राओं के व्यक्तित्व विकास को और अधिक प्रखर करने में उक्त पत्रिका अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

मैं पत्रिका के सफलतम प्रकाशन हेतु सभी को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

अध्यक्ष
राष्ट्रीय विद्यालय
समिति, रायपुर

प्राचार्य की कलम से

*** *** ***

मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारे महाविद्यालय ने "30" वर्ष पूर्ण कर लिए। और इसी कड़ी में मैं महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका "आरोहण" का नवीन संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका छात्राओं के साहित्यिक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

"आरोहण" पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की सम्पूर्ण छवि दिखाने का प्रयास किया गया। महाविद्यालय केवल व केवल ज्ञानार्जन का केन्द्र ही नहीं बल्कि छात्राओं के सर्वांगीण विकास का मंच है।

मैं सभी प्राध्यापकों, कर्मचारियों छात्राओं को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से बधाई देना चाहती हूँ जिन्होंने पत्रिका "आरोहण" के प्रकाशन सहयोग देकर पूर्ण बनाया। मैं उन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. संगीता घई,
प्र. प्राचार्य,
श्रीमती पी. जी. डागा
कन्या महाविद्यालय ,
रायपुर(छ.ग.)

महिला क्रिकेट

महिला सशक्तिकरण

*****

1. लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्तर व अंतर ले जाता है।
2. लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिला है।
3. पुरूष और महिला को बराबरी पर लाने के लिये महिला सशक्तिकरण में तेजी लाने की जरूरत है।
4. सभी क्षेत्रों में महिलाओं का उत्थान राष्ट्र की प्राथमिकता में शामिल होना चाहिये।
5. महिला और पुरूष के बीच की असमानता कई समस्याओं को जन्म देती है।
6. सशक्तिकरण को लाने के लिए महिलाओं को अपने अधिकारों से अवगत होना चाहिए।
7. महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जायेगा।
8. महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिए लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरूरत है।

अस्मिता शुक्ला
बी.कॉम. प्रथम
वर्ष

महाविद्यालय कर्मचारी

बसंत पंचमी

एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण

कविता

"प्रकृति की पुकार"

*****

आज स्वार्थ में हम करें, धरती को बेहाल
धरा क्रोध में फिर करें, विनाश अति विकराल।
दुषित है पर्यावरण, धरा हुई बीमार
बुखार इसका बढ़ रहा, कर लो कुछ उपचार।
भोजन सबको चाहिए, खेती से परहेज
जल बिन जीवन सून पर, रहे न नीर सहेज।
सॉसे हमकों दे रहे, जंगल और उपवन
पेड़ लगाए खून हम, सबसे ये निवेदन।।

गीता यादव
बी. कॉम तृतीय वर्ष

"प्रकृति की वेदना"

*****

क्यूं न सहेज कर रख ले,
इस प्रकृति का
आने वाले कल के लिए
आने वाले अपनों के लिए।
ये कटते वृक्ष
ये सूखती नदियॉ
ये सिमटते पर्वत
एक रोज यू ही खत्म हो जाएंगे।
आज हम कुछ कर सकते है
इस रोती हुइ प्रकृति के आंसू
हम पोछ सकते है।
एक वक्त बाद प्रकृति के सारे आंसू सूख जाएंगे।।

भावना ठाकुर
बी. कॉम तृतीय वर्ष

सांस्कृतिक कार्यक्रम

"प्रकृति की वेदना"

*****

कैसे ध्यान धरू में तेरा,
आशा तृष्णा ने मुझे घेरा
ओ मेरे कृष्णा, मेरे कृष्णा।।

जब भी तेरे द्वारे मैं ऑऊ, एक नयी मुराद मैं लॉऊ,
कम न हो इच्छाओं का घेरा, कैसे ध्यान धरू मैं तेरा।

ओ मेरे कृष्णा, मेरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा मेरे कृष्णा।।
धन ऐश्वर्य की आरा लगाऊॅ, मोह माया में लिपटी जाऊॅ,
छूट न जाये जंजाल का डेरा कैसे ध्यान धरू मैं तेरा
ओ मेरे कृष्णा, मेरे कृष्णा।।

कविता वर्मा
बी. ए. तृतीय वर्ष

"बचपन"

*****

कुदरत ने जो दिया मुझे,
है अनमोल खजाना!
कितना सुगम सलीना वो
ये मुश्किल कह पाना।।
चमक रहा ऐसे मानो,
सोने सा बचपना फिक्र!
फिक्र नहीं कल की
न किसी से सिकवा गिला ।।
मित्रों की जब टोली निकले
बगिया का खिला गुलाब।।

दिव्या मिश्रा
बी. एस. सी.
तृतीय वर्ष

सांस्कृतिक कार्यक्रम

महाविद्यालयीन कर्मचारी

प्रथम पंक्ति के केन्द्र में प्राचार्य श्रीमती डॉ संगीता घई
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से दाएं में डॉ पदमा शर्मा, डॉ. प्रिया चन्द्राकर एवं डॉ, मेघा ठाकुर
प्रथम पंक्ति के केन्द्र से बाएं में डॉ गायत्री शर्मा, डॉ. स्म ृति अग्रवाल एवं डॉ रेणुका बक्षी
द्वितीय पंक्ति में सहायक प्राध्यापिकाऐं